462 वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 39 | सप्तम् अंक | फरवरी 2017

इस अंक में...

12 पाठकों के पत्र
14 क्रोध प्रीति का नाश करता है
16 राष्ट्रीय घटनाक्रम
25 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
33 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
36 नवीनतम सामान्य ज्ञान
48 रोजगार समाचार
50 खेलकूद
57 युवा प्रतिभाएं
63 विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग की प्रमुख उपलब्धियाँ–2016
66 स्मरणीय तथ्य
68 विश्व परिदृश्य
73 फोकस–डिजिटल इण्डिया
76 आर्थिक लेख (i) बढ़ती बेरोजगारी : एक प्रमुख समस्या
78 (ii) डिजिटल लेन-देन पर वट्टल समिति की सिफारिशें
80 राजनीतिक लेख–अनिवार्य मतदाता की आवश्यकता
81 संवैधानिक लेख–(i) न्यायिक सक्रियता
83 (ii) भारतीय संविधान का दार्शनिक पक्ष- 'संविधान की प्रस्तावना'
85 अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध–जी-20 का 11वाँ शिखर सम्मेलन
88 ऐतिहासिक लेख–बिहार के महत्वपूर्ण गढ़ टीले
89 सामयिक लेख–बाल संरक्षण एवं बाल अधिकार
107 प्रौद्योगिकी लेख–भारत का परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम
109 कृषि लेख–भारत के कृषि एवं ग्रामीण विकास में कृषि क्रान्तियों का योगदान
112 सार संग्रह
116 सामान्य अध्ययन-मध्य प्रदेश पी.एस.सी. मुख्य परीक्षा, 2015
124 वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान–(i) राष्ट्रीय रक्षा अकादमी एवं नौसेना अकादमी परीक्षा, 2016
132 (ii) बैंक ऑफ बड़ौदा (पी.ओ.) परीक्षा, 2016
136 (iii) दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड पी.जी.टी. परीक्षा, 2014
142 (vi) छत्तीसगढ़ पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा, 2015
150 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
152 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
153 ऐच्छिक विषय–अर्थशास्त्र–यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2016
157 राजनीति विज्ञान–यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2016
162 शिक्षा–यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2016
169 सामान्य जानकारी–भारत के प्रमुख ऐतिहासिक युद्ध
171 तर्कशक्ति–नाबार्ड असिस्टेंट मैनेजर परीक्षा, 2016
176 संख्यात्मक अभियोग्यता–सिन्डीकेट बैंक ऑफ इण्डिया (पी.ओ.) परीक्षा, 2016
183 क्या आप जानते हैं ?
184 अपना ज्ञान बढ़ाइए
185 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध–नेपाल से स्वस्थ रिश्ते कायम रखने की जिम्मेदारी भारत पर है
187 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक–451 का परिणाम
188 सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक–177
191 English Language— United India Insurance Co. Ltd. (A.O.) Exam., 2016

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

क्रोध प्रीति का नाश करता है

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

''आप अपने क्रोध के लिए दण्डित नहीं किए जाते, आप अपने क्रोध से ही दण्डित किए जाते हैं.''

– भगवान बुद्ध

'क्रोध' एक मानसिक व भावनात्मक आवेग है, जो चित्त के असन्तुलन से प्रगट होता है और कई बार वाणी व शरीर से अभिव्यक्त होता हुआ, हदें पार कर जाता है व अन्य लोगों की देह व मन की शान्ति को भी नष्ट कर डालता है. क्रोध आवेग के क्षणों में धैर्य खो चुका व्यक्ति अकरणीय कर डालता है, फिर पछताता भी है, किन्तु तब तक पानी सिर के ऊपर से बह चुका होता है, खेत को चिड़िया चुग चुकी होती है. एक युवक ने ऐसे ही पछतावे के गम को अपने मन से हटाने की इच्छा से किसी फकीर के समक्ष अपने क्रोध की चर्चा की. अपने दोषों की आलोचना की. वह बोला कि मैं गुस्से के आवेश में अपने मित्रों को बहुत भला-बुरा कह आया. मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए था, किन्तु वे खुद पर काबू नहीं कर सके. मैंने अपने मन की भड़ास निकाल तो दी, किन्तु अब मेरे मन में बहुत बोझ है. मैं इस बोझ से मुक्त होने के लिए आपके पास आया हूँ. आप मुझे शान्ति का दान दो. आप मेरे दोषों से मुझे मुक्त होने में मदद करो. वह फकीर बोला कि ''ऐसा करो कि तुम यहाँ कुछ पंख इकट्ठे करके ले आओ, जब तुम पंखों को ले आओगे तब ही मैं तुम्हारे लिए कुछ कर पाऊँगा.'' वह युवक बाजार में गया. सड़कों पर बिखरे हुए पक्षियों के पंखों को इकट्ठे करके लाया. उसे बहुत समय लगा, अनेक रास्तों से गुजरने व खोजने पर उसे मुट्ठी भर पंख मिल पाए. जब वह पंखों को लेकर फकीर के समक्ष पहुँचा, तो उसे इस बात का सुकून था कि अब शायद मैं अपने क्रोध में हुए दुष्कृत्यों से व उसके परिणामों से मुक्त हो जाऊँगा, किन्तु फकीर ने उसके हाथ में रखे हुए पंखों को लेकर पुनः उसी के हाथ में थमाते हुए कहा कि अब तुम इन पंखों को जहाँ-जहाँ से लाए थे, इन्हें वापस वहीं छोड़ आओ. उस युवक ने कहा—ये तो असम्भव है. जिन-जिन मार्गों, गली, कूचों से मैं इन्हें इकट्ठा कर पाया हूँ, उन सबकी अब मुझे स्मृति भी नहीं है, कहाँ-कहाँ से व कैसे मैं इन्हें ला पाया हूँ, अब पुनः वहीं छोड़ आना मुश्किल ही नहीं असम्भव है. मैं क्या कर सकता हूँ ? और अगर इन पंखों को पुनः वहीं छोड़ देना था, तो आपने इनको मँगवाया ही क्यों था ? क्या आप पगला गए हैं ? फकीर हँसा. खूब हँसा और वह बोला कि जैसे अपने स्थानों पर इन पंखों का वापस छोड़ पाना असम्भव है, वैसे ही तुमने अनर्गल बोलकर, क्रोध के आवेश में अपने मित्रों व परिजनों को जो कष्ट दे दिया है, उनके दिलों में जो दाग छोड़ दिए हैं, उनको पुनः भर पाना भी असम्भव है. उनके हृदय छलनी-छलनी हो चुके हैं. इसीलिए तुम समझो कि क्रोध को नहीं करना ही इस पाप का प्रायश्चित है. क्रोध करना और फिर माफी माँग लेना—यह सिलसिला तुम्हें छोड़ना ही होगा अन्यथा तुम जिन्दगी में अकेले रह जाओगे. याद रखो कि ''कोहो पिइं पणासेइ.''

●●●